Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) और भविष्य का रोजगार

डॉ. दिलीप पीपाड़ा

सह-आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, सेठ मथुरादास राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा, राजसंमद, राज

Email: dilip.anitapipara@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180224
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 125-128
February - 2026
Submitted: 17 Jan. 2026
Revised: 27 Jan. 2026
Accepted: 12 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence–ए.आई.) समकालीन विश्व की सबसे प्रभावशाली तकनीकी प्रगति के रूप में उभर रही है, जो उत्पादन, सेवा, शासन तथा श्रम बाजार की संरचना को गहराई से प्रभावित कर रही है। ए.आई. आधारित स्वचालन ने जहां कार्यों की दक्षता, सटीकता और उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि की है, वहीं यह पारंपरिक रोजगारों के प्रतिस्थापन की आशंका भी उत्पन्न करता है। विशेष रूप से दोहरावयुक्त और नियम–आधारित कार्यों में मशीनों की बढ़ती भूमिका ने रोजगार सुरक्षा, कौशल प्रासंगिकता और कार्य की प्रकृति पर गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। इस संदर्भ में ए.आई. को केवल तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि एक संरचनात्मक आर्थिक परिवर्तन के रूप में समझना आवश्यक हो जाता है।

यह शोध–सार इस बात का विश्लेषण करता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य के रोजगार को किस प्रकार पुर्नपरिभाषित कर रही है जहां एक ओर यह नई नौकरियों, उन्नत कौशलों और नवाचार–आधारित कार्य अवसरों का सृजन करती है, वहीं दूसरी ओर कौशल ध्रुवीकरण, असमानता और श्रम बाजार के अस्थिरीकरण की चुनौतियाँ भी उत्पन्न करती है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि ए.आई. का अंतिम प्रभाव न तो पूर्णतः रोजगार–विरोधी है और न ही स्वतः रोजगार–सृजक, बल्कि यह शिक्षा, कौशल विकास, सामाजिक सुरक्षा और सार्वजनिक नीति की दिशा पर निर्भर करता है। अतः भविष्य का रोजगार ए.आई. से नहीं, बल्कि ए.आई. के प्रति समाज की नीतिगत और संस्थागत तैयारी से निर्धारित होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा तथा उसके रोजगार पर पड़ने वाले बहुआयामी प्रभावों का विश्लेषण करना है। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि ए.आई. आधारित स्वचालन किस प्रकार रोजगार की संरचना, स्वरूप और गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है। इसके अंतर्गत रोजगार सृजन और रोजगार प्रतिस्थापन की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, कौशल ध्रुवीकरण और आय असमानता जैसी समस्याओं की पहचान, तथा भारत जैसे विकासशील देशों पर ए.आई. के प्रभावों का विश्लेषण शामिल है। साथ ही, भविष्य के रोजगार के संदर्भ में शिक्षा, कौशल विकास और नीतिगत हस्तक्षेप की भूमिका का आकलन करना भी इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्वचालन का प्रभाव रोजगार पर एकरूप नहीं होता, बल्कि यह क्षेत्र, कौशल स्तर और आर्थिक संरचना के अनुसार भिन्न–भिन्न रूप में प्रकट होता है। यह भी माना गया है कि ए.आई. के विस्तार से उच्च कौशल वाले रोजगारों की मांग में वृद्धि होती है, जबकि मध्यम कौशल वाले पारंपरिक रोजगारों में अपेक्षाकृत कमी आती है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन यह परिकल्पित करता है कि भारत जैसे विकासशील देशों में ए.आई. का रोजगार पर प्रभाव विकसित देशों की तुलना में अधिक जटिल और असमान हो सकता है, तथा शिक्षा, कौशल विकास और प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप ए.आई. के संभावित रोजगार–विनाशक प्रभावों को काफी हद तक कम करने में सक्षम हैं।

अनुसंधान पद्धति

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है,

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. दिलीप पीपाड़ा, सह-आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, सेठ मथुरादास राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा, राजसंमद, राज

How to cite this article:
पीपाड़ा, . दिलीप . (2026). कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) और भविष्य का रोजगार. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 125–128. https://doi.org/10.5281/zenodo.18934016

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18934016
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

जिन्हें आर्थिक सर्वेक्षण,आर.बी.आई.,आई.एल.ओ., विश्व बैंक, ओ.ई.सी.डी., नीति आयोग तथा विभिन्न अकादमिक शोध पत्रिकाओं और आधिकारिक रिपोर्टों से संकलित किया गया है।

उपलब्ध साहित्य और आँकड़ों का तुलनात्मक तथा गुणात्मक विश्लेषण कर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार के बीच संबंधों को समझने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन कारणात्मक निष्कर्ष स्थापित करने के बजाय प्रवृत्तियों, संभावनाओं और चुनौतियों की व्याख्या पर केंद्रित है, जिससे भविष्य के नीति–निर्माण और अकादमिक विमर्श के लिए एक सैद्धांतिक आधार प्राप्त हो सके।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence–AI) से अभिप्राय ऐसी कंप्यूटर आधारित प्रणालियों और मशीनों से है, जिन्हें इस प्रकार विकसित किया जाता है कि वे मानव बुद्धि से जुड़े कार्य–जैसे सीखना, तर्क करना, विश्लेषण करना, भाषा को समझना तथा निर्णय लेना स्वतः कर सकें। परंपरागत मशीनें केवल पूर्व–निर्धारित निर्देशों पर कार्य करती थीं, जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त प्रणालियाँ अनुभव से सीखने और बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता रखती हैं। मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एन.एल.पी.) और कंप्यूटर विजन जैसे उपक्षेत्र ए.आई. को अधिक सक्षम बनाते हैं, जिससे मशीनें जटिल समस्याओं का समाधान करने में मानव के समकक्ष या कई बार उससे अधिक प्रभावी सिद्ध हो रही हैं।

अर्थशास्त्रीय दृष्टि से कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक सामान्य प्रयोजन प्रौद्योगिकी (General Purpose Technology) माना जाता है, जो अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रों में व्यापक प्रभाव डालती है। ए.आई. केवल श्रम को प्रतिस्थापित करने वाला साधन नहीं है, बल्कि यह श्रम की उत्पादकता बढ़ाने, निर्णय–निर्माण को बेहतर बनाने और नए आर्थिक अवसर उत्पन्न करने की क्षमता भी रखती है। यही कारण है कि ए.आई. का प्रभाव रोजगार की संख्या तक सीमित न होकर उसके स्वरूप, कौशल आवश्यकताओं और कार्य की गुणवत्ता तक विस्तृत हो जाता है। इस प्रकार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा को समझे बिना भविष्य के रोजगार पर उसके प्रभाव का सम्यक् विश्लेषण संभव नहीं है।

ए.आई.और स्वचालन– रोजगार पर सीधा प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्वचालन (AI & driven Automation) का रोजगार पर सबसे प्रत्यक्ष और तात्कालिक प्रभाव कार्यों के प्रतिस्थापन के रूप में दिखाई देता है। पारंपरिक स्वचालन जहाँ केवल शारीरिक और दोहरावयुक्त कार्यों तक सीमित था, वहीं ए. आई. ने संज्ञानात्मक और निर्णय–आधारित कार्यों में भी मशीनों की भागीदारी बढ़ा दी है। परिणामस्वरूप डेटा प्रविष्टि, कॉल सेंटर सेवाएँ, लेखांकन के कुछ कार्य, विनिर्माण इकाइयों की असेंबली लाइन तथा लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में मानव श्रम की आवश्यकता कम होती जा रही है। इससे अल्पावधि में रोजगार ह्रास, कार्य–असुरक्षा और श्रमिकों के विस्थापन की समस्या उत्पन्न होती है, विशेषकर उन कर्मचारियों के लिए जिनके कौशल सीमित और विशिष्ट हैं।

हालाँकि ए.आई. और स्वचालन का प्रभाव केवल रोजगार समाप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कार्यों की प्रकृति में भी परिवर्तन ला रहा है। कई क्षेत्रों में मशीनें मानव श्रम का पूर्ण प्रतिस्थापन करने के बजाय उसे पूरक भूमिका में ढाल रही हैं, जहाँ मनुष्य अधिक निगरानी, विश्लेषण और रचनात्मक कार्यों पर केंद्रित हो रहा है। इससे कार्य की उत्पादकता और गुणवत्ता में वृद्धि होती है, किंतु साथ ही कौशल उन्नयन की अनिवार्यता भी बढ़ जाती है। अतः ए.आई. और स्वचालन रोजगार को केवल कम नहीं कर रहे, बल्कि उसे पुनर्संरचित कर रहे हैं, जहाँ भविष्य में रोजगार का अस्तित्व श्रमिकों की अनुकूलन क्षमता और कौशल विकास पर निर्भर करेगा।

रोजगार सृजन की संभावनाएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को प्रायः रोजगार समाप्त करने वाली तकनीक के रूप में देखा जाता है, किंतु इसका दूसरा पक्ष रोजगार सृजन की व्यापक संभावनाओं से जुड़ा हुआ है। ए.आई. के विकास, संचालन और रखरखाव के लिए अनेक नए प्रकार के रोजगार उत्पन्न हो रहे हैं, जैसे–डेटा वैज्ञानिक, ए.आई. इंजीनियर, मशीन लर्निंग विशेषज्ञ, साइबर सुरक्षा विश्लेषक और एल्गोरिदम ऑडिटर। इसके अतिरिक्त, डिजिटल स्वास्थ्य, फिनटेक, ई–कॉमर्स, स्मार्ट कृषि और एडटेक जैसे नए क्षेत्रों में ए.आई. के प्रयोग ने नवाचार–आधारित स्टार्टअप्स और उद्यमिता को बढ़ावा दिया है, जिससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के रोजगार अवसर सृजित हो रहे हैं। इस प्रकार, ए.आई. तकनीकी परिवर्तन के साथ–साथ आर्थिक संरचना के विविधीकरण का माध्यम भी बन रही है।

इसके साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा उत्पादकता में होने वाली वृद्धि आर्थिक विकास को गति प्रदान करती है, जो दीर्घकाल में रोजगार सृजन का प्रमुख आधार होती है। जब उत्पादन लागत घटती है और दक्षता बढ़ती है, तो नए बाजार, सेवाएँ और उद्योग विकसित होते हैं, जिनमें मानव श्रम की आवश्यकता बनी रहती है। विशेष रूप से ऐसे कार्यों में जहाँ रचनात्मकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक संवाद और नैतिक निर्णय की आवश्यकता होती है मानव की भूमिका अपूरणीय बनी रहती है। अतः ए.आई.रोजगार का अंत नहीं, बल्कि रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन का संकेत है, जहाँ भविष्य के अवसर उन व्यक्तियों और अर्थव्यवस्थाओं के लिए अधिक होंगे जो कौशल उन्नयन और तकनीकी अनुकूलन को समय रहते अपनाते हैं।

कौशल ध्रुवीकरण और रोजगार की गुणवत्ता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रसार का एक महत्वपूर्ण प्रभाव कौशल ध्रुवीकरण के रूप में सामने आ रहा है, जिसमें श्रम बाजार उच्च कौशल और निम्न कौशल वाले कार्यों की ओर अधिक झुकता जा रहा है, जबकि मध्यम कौशल वाली पारंपरिक नौकरियाँ धीरे–धीरे समाप्त हो रही हैं। ए.आई. आधारित तकनीकें जटिल विश्लेषणात्मक और तकनीकी कौशल वाले कर्मचारियों की मांग बढ़ाती हैं, वहीं साधारण और दोहरावयुक्त कार्यों को स्वचालित कर देती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि रोजगार की गुणवत्ता

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

में असमानता बढ़ जाती है जहाँ एक ओर उच्च वेतन, स्थायित्व और सामाजिक सुरक्षा वाली नौकरियाँ उपलब्ध होती हैं, वहीं दूसरी ओर अस्थायी, असुरक्षित और गिग–आधारित रोजगार का विस्तार होता है। इस प्रवृत्ति से आय असमानता, कार्य–असुरक्षा और सामाजिक असंतुलन की चुनौतियाँ गहराती हैं, जिन्हें संतुलित करने के लिए व्यापक कौशल उन्नयन और सामाजिक सुरक्षा नीतियों की आवश्यकता होती है।

भारत जैसे विकासशील देशों पर प्रभाव

भारत जैसे विकासशील देशों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक जटिल और बहुआयामी है, क्योंकि यहाँ बड़ी जनसंख्या श्रम–प्रधान और कम मध्यम कौशल वाले क्षेत्रों पर निर्भर करती है। ए.आई. आधारित स्वचालन से बी.पी.ओ.,आई.टी.ई.एस.,विनिर्माण और कृषि जैसे क्षेत्रों में कार्यों की प्रकृति बदल रही है, जिससे कुछ पारंपरिक रोजगारों में कमी की आशंका उत्पन्न होती है। साथ ही, सीमित डिजिटल साक्षरता, असंगठित क्षेत्र की व्यापकता और सामाजिक सुरक्षा की कमजोरी इन प्रभावों को और गंभीर बना देती है। दूसरी ओर, यदि भारत अपनी जनसांख्यिकीय लाभांश, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना और कौशल विकास कार्यक्रमों का प्रभावी उपयोग करे, तो ए.आई.उत्पादकता बढ़ाने, नए उद्यमों को प्रोत्साहित करने और उच्च गुणवत्ता वाले रोजगार सृजित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर भी प्रदान कर सकती है। अतः भारत जैसे विकासशील देशों में ए.आई. का प्रभाव पूरी तरह नकारात्मक या सकारात्मक न होकर, नीतिगत तैयारी और संस्थागत क्षमता पर निर्भर करता है।

शिक्षा और कौशल विकास की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भविष्य के रोजगार को सुरक्षित और समावेशी बनाने के लिए शिक्षा और कौशल विकास की भूमिका अत्यंत निर्णायक हो जाती है। पारंपरिक रट–आधारित और डिग्री–केंद्रित शिक्षा प्रणाली ए.आई. आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने में अपर्याप्त सिद्ध हो रही है। वर्तमान समय में डिजिटल साक्षरता, विश्लेषणात्मक क्षमता, समस्या–समाधान कौशल, रचनात्मकता और आजीवन सीखने की प्रवृत्ति को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाना आवश्यक है। इसके साथ ही पुनः–कौशल और उन्नत कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यरत श्रमिकों को तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप ढालना होगा। यदि शिक्षा प्रणाली और कौशल विकास नीतियाँ समयानुकूल और समावेशी हों, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता(ए.आई.)रोजगार के लिए खतरा नहीं, बल्कि मानव क्षमता को सशक्त करने का माध्यम बन सकती है।

असमानता और सामाजिक प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) के तीव्र प्रसार से आर्थिक और सामाजिक असमानताओं के गहराने की आशंका बढ़ गई है, क्योंकि ए. आई. से होने वाले लाभ समान रूप से सभी वर्गों तक नहीं पहुँच पाते। उच्च कौशल और तकनीकी दक्षता वाले व्यक्तियों तथा बड़े कॉर्पोरेट संगठनों को जहाँ ए.आई. से अधिक उत्पादकता, आय और अवसर प्राप्त होते हैं, वहीं कम कौशल वाले श्रमिक रोजगार असुरक्षा, आय ह्रास और सामाजिक हाशियाकरण का सामना करते हैं। इसके अतिरिक्त डिजिटल डिवाइड, क्षेत्रीय विषमताएँ और लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ भी ए.आई. के प्रभाव से और तीव्र हो सकती हैं। यदि सामाजिक सुरक्षा, समावेशी शिक्षा और पुनः–कौशल प्रशिक्षण पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाए, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकी प्रगति के साथ–साथ सामाजिक तनाव और असमानता को भी बढ़ा सकती है। अतः इसके सामाजिक प्रभावों को संतुलित करना नीति–निर्माण की एक प्रमुख चुनौती है।

नीति और शासन की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य के रोजगार के बीच संतुलन स्थापित करने में नीति और शासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि तकनीकी परिवर्तन का सामाजिक प्रभाव स्वतः नियंत्रित नहीं होता। सरकार को ऐसे नीतिगत ढाँचे विकसित करने की आवश्यकता है जो ए.आई. नवाचार को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ श्रमिकों के हितों की रक्षा भी करें। इसके अंतर्गत श्रम कानूनों का आधुनिकीकरण, पुनः–कौशल और उन्नत कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार, सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों को मजबूत करना तथा ए.आई. के नैतिक और उत्तरदायी उपयोग के लिए नियामक व्यवस्था स्थापित करना शामिल है। साथ ही सार्वजनिक–निजी भागीदारी और शिक्षा संस्थानों के सहयोग से भविष्योपयोगी कौशल विकसित किए जा सकते हैं। प्रभावी और दूरदर्शी शासन के माध्यम से ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता को रोजगार–विनाशक के बजाय मानव–पूरक और समावेशी विकास का साधन बनाया जा सकता है।

अनुसंधान के निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार के स्वरूप और गुणवत्ता दोनों पर गहरा प्रभाव डाल रही है। ए.आई.आधारित स्वचालन से पारंपरिक और दोहराव वाले कार्य घट रहे हैं, जबकि उच्च कौशल और तकनीकी दक्षता वाले रोजगारों की मांग बढ़ रही है, जिससे श्रम बाजार में कौशल ध्रुवीकरण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत जैसे विकासशील देशों में ए.आई. का प्रभाव जटिल और असमान है, क्योंकि यहाँ कम–कौशल वाले श्रमिकों की संख्या अधिक है और डिजिटल साक्षरता सीमित है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि यदि शिक्षा, कौशल विकास और नीतिगत हस्तक्षेप समय पर लागू किए जाएँ, तो ए.आई.रोजगार के अवसर बढ़ाने और नई नौकरियों का सृजन करने में सहायक हो सकती है। दूसरी ओर, उपयुक्त नीति और सामाजिक सुरक्षा नीतियों के अभाव में ए.आई.असमानता, बेरोजगारी और सामाजिक अस्थिरता को बढ़ा सकती है। अतः ।ᖮ का प्रभाव केवल तकनीकी परिवर्तन तक सीमित नहीं, बल्कि यह शिक्षा, कौशल विकास और नीति–निर्माण की तैयारी पर भी निर्भर करता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

सुझाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य के रोजगार को सकारात्मक दिशा में विकसित करने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए जा सकते हैं। सबसे पहले, शिक्षा और कौशल विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है डिजिटल साक्षरता, विश्लेषणात्मक क्षमता, समस्या–समाधान कौशल और रचनात्मकता को शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इसके साथ ही पुनः–कौशल और उन्नत कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यरत श्रमिकों को ए.आई.आधारित तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए। नीति–निर्माण के क्षेत्र में प्रभावी श्रम कानूनों का आधुनिकीकरण, सामाजिक सुरक्षा की मजबूत प्रणाली और ए.आई. के नैतिक उपयोग के लिए नियामक ढाँचे की स्थापना अनिवार्य है। इसके अलावा, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाकर नवाचार–आधारित रोजगार सृजन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अंततः, समाज और सरकार को ए.आई. के लाभों को व्यापक और समावेशी बनाने के लिए सतत निगरानी, मूल्यांकन और सुधार प्रक्रिया अपनानी होगी, जिससे यह तकनीक रोजगार के अवसर बढ़ाने और सामाजिक असमानताओं को कम करने में सहायक बन सके।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य का रोजगार एक जटिल तथा बहुआयामी संबंध को दर्शाता है, जिसे केवल रोजगार ह्रास या तकनीकी प्रगति के सीमित दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। ए.आई. ने जहाँ उत्पादन, दक्षता और निर्णय–निर्माण में अभूतपूर्व सुधार किए हैं, वहीं इसने श्रम बाजार की संरचना, कौशल आवश्यकताओं और रोजगार की गुणवत्ता में भी गहरे परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। रोजगार का भविष्य अब इस बात पर निर्भर करता है कि समाज और अर्थव्यवस्था किस सीमा तक इन परिवर्तनों को समझकर स्वयं को अनुकूलित कर पाते हैं। यदि तकनीकी परिवर्तन को मानवीय आवश्यकताओं से अलग कर दिया गया, तो यह असमानता, बेरोजगारी और सामाजिक अस्थिरता को बढ़ा सकता है।

अतः चुनौती कृत्रिम बुद्धिमत्ता को रोकने की नहीं, बल्कि उसे सही दिशा में नियंत्रित और उपयोग करने की है। समावेशी शिक्षा, सतत कौशल विकास, मजबूत सामाजिक सुरक्षा और दूरदर्शी नीति–निर्माण के माध्यम से ए.आई. को मानव श्रम का प्रतिस्थापक नहीं, बल्कि उसका पूरक बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य के रोजगार के लिए खतरा नहीं, बल्कि एक अवसर के रूप में उभर सकती है बशर्ते इसे आर्थिक दक्षता के साथ–साथ सामाजिक न्याय और मानव गरिमा के लक्ष्यों से जोड़ा जाए।

संदर्भ

1. Economic Survey 2024 & 25, Ministry of Finance, Government of India.
2. Reserve Bank of India (RBI) Annual Report 2023&24.
3. NITI Aayog (2022) National Strategy for Artificial Intelligence- Government of India.
4. World Bank (2021) World Development Report: Data for Better Jobs.
5. International Labour Organization (ILO) (2022) the Future of Work in the Era of AI.
6. Brynjolfsson, E.J. & Mc. Afee, A. (2014) The Second Machine Age: Work Progress and Prosperity in a Time of Brilliant Technologies. W. W. Norton & Company.
7. O.E.C.D.(2023)AI and the Labour Market: Policy Insights.